Lecture - 17

Topic

Dr. Surita Kumari
Subject - Philosophy.
B.A Part - I (H.)
Paper - I

(I) Syadvada.

Ans:- जैन दर्शन के अनुसार वस्तुओं के अनन्त धर्म कर्म वस्तु, हम किसी भी वस्तु के जितने गुणों और पहलुओं को जानते है उतने ही गुण या पहलू उस वस्तु मे नही होते है।

वस्तु के अनन्त धर्म को जानना हमारे लिए सम्भव नही है। यह जैन का अनेकान्त वाद है। अतः चूँकि हम वस्तु के अनन्त धर्म को नही जान सकते है। अतः यह कहा जा सकता है। वस्तु के हम सही सही नही हम जानते है।

अतः वस्तुओं के विषय मे हमारा ज्ञान एकांगी है। इसलिए इस ज्ञान को को जैन धर्म मे स्याद्वाद मे बतलाया गया है। स्याद्वाद मे एक निरपेक्ष

P.T.O.

Scanned with CamScanner

रूप से कह सकते हैं।

स्याद्वाद जैनदर्शन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग है।

(Syadvada Jainism Philosophy)

इसकी धारणा है। 'स्याद' शब्द संस्कृत की 'अस' धातु से बना जानी होना कि विविधिता का होना एक अत्यधिक अनियत है। इसका अर्थ हो सकता है :⟹ शायद। इसलिए स्याद्वाद शायद का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का तात्पर्य है कि वस्तु को अनेक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। एक भिन्न निष्कर्ष प्राप्त होता है। किसी भी वस्तु में जो हमारा निर्णय होता है वह भी दृष्टियों से स्वतंत्र नहीं होता है।

साधारण मनुष्य का ज्ञान अपूर्ण एवं आंशिक होता है। हमारे मतभेद का कारण यह है कि हम उपर्युक्त सिद्धांत को भूल जाते हैं हम उपर्युक्त सिद्धांत को भूल जाते हैं और विचारों को सर्वथा सत्य

P.T.O.

Scanned with CamScanner

इस उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है। ये अंधे हाथी के आकार का ज्ञान जानने के उद्देश्य से हाथी के अंगों को स्पर्श करते हैं। कोई उसका पेट, कोई पैर, कोई कान, कोई पूँछ तथा कोई सूँड़ पकड़ता है। प्रत्येक अन्धा सोचता है कि उसी का ज्ञान स्वरुप है।

शेष गलत हैं किन्तु जैसे ही उन्हें यह विश्वास दिलाया जाता है कि प्रत्येक ने हाथी का एक-एक अंग स्पर्श किया है। उनका मतभेद दूर हो जाता है।

स्याद्वाद का संबंध दो तरह के मतभेद देखने को मिलते हैं। पहला मत उस उपनिषदों का था कि सत् ही तत्व है। दूसरा छान्दोग्य उपनिषद का किन्तु अस्वीकृत असत् ही तत्व है। अतः जैन दर्शन के अनुसार दोनों ही सत् अंशतः सही है। (Judgement) जैनियों का मत इसी प्रकार है।

END